पंचम अध्याय

उपसंहार और सुझाव

उपसंहार - सुझाव

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में पिछले चार अध्यायों में विभिन्न दृष्टियों से मैंने कि सातवीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र भाषिक कौशलों से अवगत होता है या नहीं। इसी आधार पर कुछ निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया है।

इस लघु शोध-प्रबन्ध में मुख्य चार अध्याय है। गत चार अध्यायों में विषय परिचय, हिन्दी भाषा की संरचना, पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन भाषिक उद्देश्यों के आधार पर पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी अध्ययन, अध्यापन और पाठ्यपुस्तकें आदि का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय में विषय का परिचय, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक और पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया का विवेचन किया है। पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया के संबंध में किताबी जानकारी प्राप्त न होने के कारण मैंने शिक्षण संक्रमण मासिक पत्रिका का आधार लिया है।

अनुसंधान के पश्चात स्पष्ट हुआ कि पाठ्यक्रम का निर्माण कुछ अंशों में उद्देश्यानुरूप नहीं हुआ है। साथ ही पाठ्यपुस्तकों में छपाई की त्रुटियाँ दिखाई देती हैं। उदाहरण के रूप में पाँचवी कक्षा हिन्दी पाठ्यपुस्तक में पृष्ठ क्रमांक ३६ पर कलेवा यह शब्द, शब्दार्थ में कलेवा ऐसा लिखा है। सातवीं कक्षा हिन्दी पाठ्यपुस्तक में पृ.क्र.४३ गाडी में के बदले गाडी में, पृ.क्र.६२ पर गुण के बदले गुन, पृ.क्र.६५ पर माता-पिता की जगह मात-पिता, पृ.क्र.९४ पर करधनी की जगह करधोनी जैसे गलत शब्दों का प्रयोग हुआ है। मानक हिन्दी की दृष्टि से इन जगहों पर सुधार करना आवश्यक है।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी भाषा की संरचना पर डॉ.हेबाळकर द्वारा दी गई संरचना एवं डॉ.सी.वास्कर जी के ग्रंथों का आधार लेकर विवेचन

किया है । साथ ही पूर्व माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा अध्यापन के उद्देश्य का विवेचन है । पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों द्वारा अवगत भाषिक ज्ञान वाचन, लेखन भाषण, व पूर्व माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा हिन्दी अध्यापन के उद्देश्य, प्राथमिक शिक्षण अभ्यासक्रम १९८८ को आधार मानकर स्पष्ट किये हैं ।

तृतीय अध्याय में पाँचवी, छठी, सातवीं कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन भाषिक उद्देश्यों के आधार पर किया है ।

चतुर्थ अध्याय में पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी अध्ययन-अध्यापन और पाठ्यपुस्तकों का विवेचन और कुछ संबद्ध नमुना छात्रों, अध्यापकों, शिक्षाक-प्रशिक्षाकों से साक्षात्कार कर के निष्कर्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी को सारणी के रूप में प्रस्तुत किया है ।

अत: स्पष्ट है कि, पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम की निर्मिति करने वाले सदस्य अधिक मात्रा में शहरी होने के कारण पूरी तरह निर्दोष पाठ्यपुस्तकों की निर्मिति नहीं हुई है । साथ ही पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्यापक अध्यापन करते समय उद्देश्यानुरूप अध्यापन नहीं करते हैं । पाँचवीं, छठी, सातवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों में छपाई की दृष्टि से जो गलतियाँ हुई हैं उस में सुधार होना आवश्यक है ।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि पूर्व माध्यमिक स्तर पर जिन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पाठ्यपुस्तकों का निर्माण हुआ है उन सभी उद्देश्यों की पूर्ति नहीं होती । इसका असली कारण है हिन्दी अध्यापक द्वारा किया जाने वाला पाठ्यपुस्तकों का अनुचित प्रयोग । आज कल हिन्दी का अध्यापक परीक्षा को महत्व देकर और एक निश्चित समय में पाठ्यक्रम पूरा करने की दृष्टि से अध्यापन करता है, वह सभी भाषिक उद्देश्यों की ओर परिपूर्ण ध्यान नहीं देता है । परिणाम स्वरूप छात्र सभी भाषिक कौशलों से अवगत नहीं होता ।

अध्यापकों ने मानक उच्चारण, लेखन की ओर ध्यान देना चाहिए । मगर पूर्व माध्यमिक स्तर के अधिकतर अध्यापकों को हिन्दी के मानक उच्चारण और मानक लेखन की जानकारी नहीं है । परिणाम स्वरूप सातवीं कक्षा उत्तीर्ण अधिकतर छात्र न मानकहिन्दी में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं, और न लिख सकते हैं । छात्रों को इन भाषिक कौशलों से अवगत कराने के लिए अध्यापकों ने पाठ्यपुस्तक निर्मिति के संदर्भ में निहित उद्देशानुरूप अध्यापन करना चाहिए ।

मैं सुझाव के रूप में इतना ही कहना चाहता हूँ कि पाठ्यक्रम निर्माण करने वाले जो सदस्य हैं, वे मात्र शहरी न होकर, शहरी और ग्रामीण होने चाहिए । पाठ्यक्रम उद्देशानुरूप हो । पाठ्यक्रम का निर्माण शहरी और ग्रामीण छात्रों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर हों । माध्यमिक स्तर के अध्यापकों द्वारा मानक हिन्दी की पुस्तिका का प्रयोग किया जाय । ताकि वे मानक हिन्दी को समझें । हिन्दी में जो नया मानक परिवर्तन हो रहा है, वह उनकी समझमें आयें । पाठ्यपुस्तक में छपाई की जो त्रुटियाँ दिखाई देती हैं उसमें तुरंत सुधार होना आवश्यक है और अध्यापकों ने अध्यापन करते समय परीक्षा को महत्व न देकर भाषिक कौशलों की पूर्ति पर अधिक बल देना चाहिए । तब ही सातवीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र भाषिक कौशलों से अवगत हो जायेगा ।

अत: स्पष्ट है कि इन सुझावों को यदि पूरे अहसास के साथ अमल में लाया जाए तो पाठ्यपुस्तकों की त्रुटियाँ दूर होगी, साथ ही साथ पाठ्यपुस्तकों में निहित उद्देश्यों तक छात्र पहुँच पायेंगे ।